6 उपनिवेशवाद और शहर

एक शाही राजधानी की कहानी

औपनिवेशिक शासन में शहरों का क्या हुआ?

आप देख चुके हैं कि ब्रिटिश सत्ता की स्थापना के बाद गाँवों का जीवन किस तरह बदल गया था। इसी समय शहरों में क्या हो रहा था? इसका जवाब इस बात पर निर्भर करता है कि हम किस तरह के क़स्बे या शहर की चर्चा करते हैं। मदुरै जैसे मंदिरों के शहर का इतिहास ढाका जैसे उत्पादन शहरों या सूरत जैसे बंदरगाह या एक साथ कई तरह के काम करने वाले क़स्बों से बिलकुल अलग मिलेगा।

पश्चिमी विश्व के ज़्यादातर भागों में आधुनिक शहर औद्योगीकरण के साथ सामने आए थे। ब्रिटेन में लीड्स और मैनचेस्टर जैसे औद्योगिक शहर उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में तेज़ी से फैले क्योंकि बहुत सारे लोग नौकरी, मकान और अन्य सुविधाओं की उम्मीद में इन शहरों की तरफ आ रहे थे। लेकिन, उन्नीसवीं सदी में भारतीय शहर पश्चिम यूरोप के शहरों की तरह तेज़ी से नहीं फैले। ऐसा क्यों हुआ?

***चित्र 1** – मछलीपट्नम का एक दृश्य, 1672*

मछलीपट्नम सत्रहवीं शताब्दी में एक महत्वपूर्ण बंदरगाह के रूप में विकसित हुआ। अठाहरवीं सदी के आखिर में जब व्यापार बम्बई, मद्रास और कलकत्ता के नए ब्रिटिश बंदरगाहों पर केंद्रित होने लगा तो उसका महत्व घटता गया।

© NCERT not to be republished

अठारहवीं सदी के आखिर में कलकत्ता, बम्बई और मद्रास का महत्व **प्रेज़िडेंसी** शहरों के रूप में तेज़ी से बढ़ रहा था। ये शहर भारत में ब्रिटिश सत्ता के केंद्र बन गए थे। उसी समय बहुत सारे दूसरे शहर कमज़ोर पड़ते जा रहे थे। ख़ास चीज़ों के उत्पादन वाले बहुत सारे शहर इसलिए पिछड़ने लगे क्योंकि वहाँ जो चीज़ें बनती थीं उनकी माँग घट गई थी। जब व्यापार नए इलाकों में केंद्रित होने लगा तो पुराने व्यापारिक केंद्र और बंदरगाह पहली वाली स्थिति में नहीं रहे। इसी प्रकार, जब अंग्रेज़ों ने स्थानीय राजाओं को हरा दिया और शासन के नए केंद्र पैदा हुए तो क्षेत्रीय सत्ता के पुराने केंद्र भी ढह गए। इस प्रक्रिया को अकसर **विशहरीकरण** कहा जाता है। मछलीपट्नम, सूरत और श्रीरंगपट्म जैसे शहरों का उन्नीसवीं सदी में काफी ज़्यादा विशहरीकरण हुआ। बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में केवल 11 प्रतिशत लोग शहरों में रहते थे।

प्रेज़िडेंसी – शासन की सुविधा के लिहाज़ से औपनिवेशिक भारत को तीन "प्रेज़िडेंसी" (बम्बई, मद्रास और बंगाल) में बाँट दिया गया था। ये तीनों प्रेज़िडेंसी सूरत, मद्रास और कलकत्ता में स्थित ईस्ट इंडिया कंपनी की "फैक्ट्रियों" (व्यापारिक चौकियों) को ध्यान में रखकर बनायी गई थीं।

चित्र 2 – अठारहवीं सदी में बम्बई का बंदरगाह।
जब ईस्ट इंडिया कंपनी पश्चिमी भारत में बम्बई को मुख्य बंदरगाह के रूप में इस्तेमाल करने लगी तो बम्बई शहर फैलने लगा।

ऐतिहासिक शाही शहर दिल्ली उन्नीसवीं सदी में एक धूल भरा छोटा-सा क़स्बा बन कर रह गया था। परंतु, 1912 में ब्रिटिश भारत की राजधानी बनने के बाद इसमें दोबारा जान आ गई। आइए दिल्ली की कहानी को देखकर समझें कि औपनिवेशिक शासन के दौरान यहाँ क्या चल रहा था।

नयी दिल्ली से पहले और कितनी 'दिल्लियाँ' थीं?

आप दिल्ली को आधुनिक भारत की राजधानी के रूप में देखते रहे हैं। क्या आपको मालूम है कि यह शहर एक हज़ार साल से भी ज़्यादा समय तक राजधानी रह चुका है। इस दौरान इसमें छोटे-मोटे अंतराल भी आते रहे हैं। यमुना नदी के बाएँ किनारे पर लगभग साठ वर्ग मील के छोटे से क्षेत्रफल में कम से कम 14 राजधानियाँ अलग-अलग समय पर बसाई गईं। आधुनिक

शहरीकरण – ऐसी प्रक्रिया जिसमें अधिक से अधिक लोग शहरों और क़स्बों में जाकर रहने लगते हैं।

© NCERT not to be republished

चित्र 3 – उन्नीसवीं सदी के मध्य में शाहजहाँनाबाद की एक तसवीर, दि इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज़, 16 जनवरी 1858.
आप बाईं ओर लाल क़िला देख सकते हैं। शहर को घेरने वाली दीवारों को ध्यान से देखें। बीचोंबीच चाँदनी चौक का मुख्य रास्ता दिखाई दे रहा है। देखिए कि यमुना नदी लाल क़िले से सटकर बह रही है। अब इसका रास्ता कुछ बदल गया है। जहाँ नाव किनारे की तरफ बढ़ रही है उसे अब दरियागंज कहा जाता है (*दरिया* का मतलब नदी, और *गंज* का मतलब बाज़ार)।

नगर राज्य दिल्ली में घूमने पर इन सारी राजधानियों के अवशेष देखे जा सकते हैं। इनमें बारहवीं से सत्रहवीं शताब्दी के बीच बसाए गए राजधानी शहर सबसे महत्वपूर्ण थे।

इन सारी राजधानियों में सबसे शानदार राजधानी शाहजहाँ ने बसाई थी। शाहजहाँनाबाद की स्थापना 1639 में शुरू हुई। इसके भीतर एक क़िला-महल और बगल में सटा शहर था। लाल पत्थर से बने लाल क़िले में महल परिसर बनाया गया था। इसके पश्चिम की ओर 14 दरवाजों वाला पुराना शहर था। चाँदनी चौक और फैज़ बाज़ार की मुख्य सड़कें इतनी चौड़ी थीं कि वहाँ से शाही यात्राएँ आसानी से निकल सकती थीं। चाँदनी चौक के बीचोंबीच नहर थी।

घने मौहल्लों और दर्जनों बाज़ारों से घिरी जामा मसजिद भारत की सबसे विशाल और भव्य मसजिदों में से एक थी। उस समय पूरे शहर में इस मसजिद से ऊँचा कोई स्थान नहीं था।

शाहजहाँ के समय दिल्ली सूफ़ी संस्कृति का भी एक अहम केंद्र हुआ करती थी। यहाँ कई **दरगाह, ख़ानकाह**, और **ईदगाह** थीं। बड़े-बड़े चौराहों, टेढ़ी-मेढ़ी गलियों, खामोश **कुल-दे-सेक** और जलधाराओं पर दिल्ली वालों

दरगाह – सूफ़ी संत का मक़बरा।
ख़ानकाह – यात्रियों के लिए विश्राम घर और ऐसा स्थान जहाँ लोग आध्यात्मिक मामलों पर चर्चा करते हैं, संतों का आशीर्वाद लेते हैं या नृत्य – संगीत कार्यक्रमों का आनंद लेते हैं।
ईदगाह – मुसलमानों का खुला प्रार्थना स्थल जहाँ सार्वजनिक प्रार्थना और त्योहार होते हैं।
कुल-दे-सेक – ऐसा रास्ता जो एक जगह जाकर बंद हो जाता है।

© NCERT not to be republished

को नाज़ था। शायद इसीलिए मीर तकी मीर ने कहा था, "दिल्ली की सड़कें महज़ सड़कें नहीं हैं। वे तो किसी चित्रकार की एल्बम के पन्ने हैं।"

लेकिन यह भी आदर्श शहर नहीं था। इसके ऐशो-आराम भी सिर्फ़ कुछ लोगों के हिस्से में आते थे। अमीर और गरीब के बीच फ़ासला बहुत गहरा था। हवेलियों के बीच गरीबों के असंख्य कच्चे मकान होते थे। शायरी और नृत्य संगीत की रंग-बिरंगी दुनिया आमतौर पर सिर्फ़ मर्दों के मनोरंजन का साधन थी। त्योहारों और जलसे-जुलूसों में जब-तब टकराव भी फूट पड़ते थे, सो अलग।

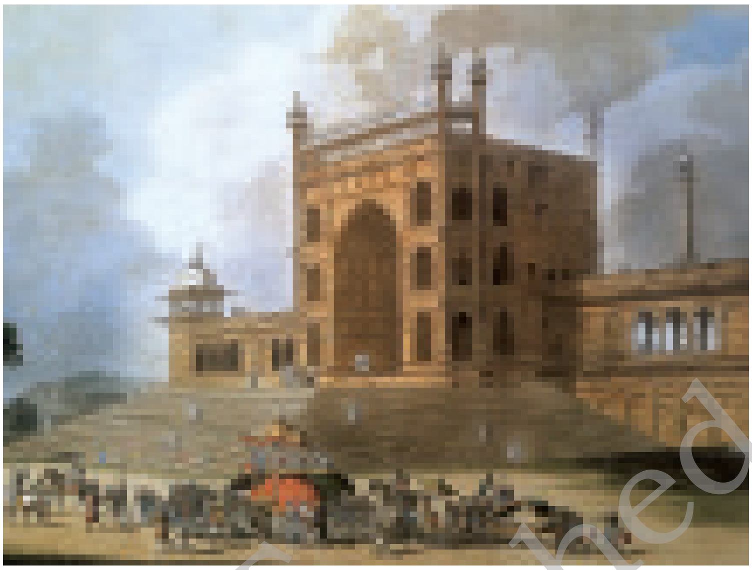

चित्र 4 - दिल्ली स्थित जामा मसजिद का पूर्वी दरवाज़ा, टॉमस डेनियल का चित्र, 1795.
मीनारों और पूरे गुंबदों वाली यह भारत की पहली मसजिद है।

चित्र 5 - दिल्ली में निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह।

स्रोत 1

"दिल्ली जो एक शहर था आलम में इंतख़ाब..."

1739 तक दिल्ली नादिर शाह के हाथों तबाही और लूट-खसोट का सामना कर चुकी थी। शहर के पतन पर दुख भरे लहज़े में अठारहवीं सदी के उर्दू शायर मीर तक़ी मीर कहते हैं :

दिल्ली जो एक शहर था
आलम में इंतख़ाब

हम रहने वाले हैं उसी
उजड़े दयार के।

(मैं उसी उजड़ी हुई दिल्ली का रहने वाला हूँ जो एक ज़माने में दुनिया का सबसे भव्य शहर थी)।

नयी दिल्ली का निर्माण

1803 में अंग्रेज़ों ने मराठों को हराकर दिल्ली पर नियंत्रण हासिल कर लिया था। क्योंकि ब्रिटिश भारत की राजधानी कलकत्ता थी इसलिए मुग़ल बादशाह को लाल क़िले के महल में रहने की छूट मिली हुई थी। आज हमारे सामने जो आधुनिक शहर दिखाई देता है यह 1911 में तब बनना शुरू हुआ जब दिल्ली ब्रिटिश भारत की राजधानी बन गयी।

एक अतीत का ध्वंस

1857 से पहले दिल्ली के हालात दूसरे औपनिवेशिक शहरों से काफी अलग थे। मद्रास, बम्बई या कलकत्ता में भारतीयों और अंग्रेज़ों की बस्तियाँ अलग-अलग होती थीं। भारतीय लोग "काले" इलाकों में और अंग्रेज़ लोग

© NCERT not to be republished

गुलफ़रोशान – फूलों का त्योहार।

पुनर्जागरण – इसका शाब्दिक अर्थ होता है कला और ज्ञान का पुनर्जन्म। यह शब्द ऐसे दौर के लिए इस्तेमाल होता है जब बहुत बड़े पैमाने पर रचनात्मक गतिविधियाँ होती हैं।

सुसज्जित "गोरे" इलाकों में रहते थे। दिल्ली में ऐसा नहीं था। ख़ासतौर से उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में दिल्ली के अंग्रेज़ भी पुराना शहर के भीतर अमीर हिंदुस्तानियों के साथ ही रहा करते थे। वे भी उर्दू/फ़ारसी संस्कृति व शायरी का मज़ा लेते थे और स्थानीय त्योहारों में हिस्सेदारी करते थे।

1824 में दिल्ली कॉलेज की स्थापना हुई जिसकी शुरूआत अठारहवीं सदी में मदरसे के रूप में हुई थी। इस संस्था ने विज्ञान और मानवशास्त्र के क्षेत्र में एक नए युग का सूत्रपात कर दिया। यहाँ मुख्य रूप से उर्दू भाषा में काम होता था। बहुत सारे लोग 1830 से 1857 की अवधि को दिल्ली **पुनर्जागरण** काल बताते हैं।

1857 के बाद यह सब कुछ बदल गया। उस साल हुए विद्रोह के दौरान विद्रोहियों ने बहादुर शाह ज़फ़र को विद्रोह का नेतृत्व सँभालने के लिए मजबूर कर दिया। चार महीने तक दिल्ली विद्रोहियों के नियंत्रण में रही।

चित्र 6 – ब्रिटिश टुकड़ियाँ दिल्ली की सड़कों पर विद्रोहियों का क़त्लेआम करके बदला ले रही हैं।

स्रोत 2

"कभी इस नाम का भी एक शहर हुआ है"

दिल्ली में आ रहे बदलावों पर ग़ालिब गहरे तौर पर दुखी थे। उन्होंने दिल्ली के अतीत पर लिखा था :

> क्या लिखूँ? दिल्ली की ज़िंदगी तो किले, चाँदनी चौक, यमुना के पुल पर जमने वाले चौकड़ियों और सलाना **गुलफ़रोशान** से धड़कती है। जब ये सारी चीज़ें .... ही यहाँ नहीं हैं तो दिल्ली ज़िंदा कैसे रह सकती है? हाँ हिंदुस्तान में कभी इस नाम का भी शहर हुआ तो ज़रूर है।

जब अंग्रेज़ों ने शहर पर दोबारा नियंत्रण हासिल किया तो वे बदले और लूटपाट की मुहिम पर निकल पड़े। प्रसिद्ध शायर गालिब उदास मन से इन घटनाओं को देख रहे थे। 1857 में दिल्ली की तबाही को उन्होंने इन शब्दों में व्यक्त किया, "जब गुस्साए शेर (अंग्रेज़) शहर में दाखिल हुए तो उन्होंने बेसहारों को मारा.... घर जला डाले। न जाने कितने औरत-मर्द, आम और ख़ास, तीन दरवाज़ों से दिल्ली से भाग खड़े हुए और उन्होंने छोटे-छोटे समुदायों तथा शहर के बाहर मक़बरों में पनाह ली।" अगली बग़ावतों को रोकने के लिए अंग्रेज़ों ने बहादुर शाह ज़फ़र को देश से निकाल दिया। अंग्रेज़ों ने उन्हें बर्मा (अब म्याँमार) भेज दिया, उनका दरबार बंद कर दिया, कई महल गिरा दिए, बागों को बंद कर दिया और उनकी जगह अपने सैनिकों के लिए बैरकें बना दीं।

अंग्रेज़ दिल्ली के मुग़ल अतीत को पूरी तरह भुला देना चाहते थे। क़िले

© NCERT not to be republished

के इर्द-गिर्द का सारा इलाका साफ कर दिया गया। वहाँ के बाग, मैदान और मसजिदें नष्ट कर दिए गए (उन्होंने मंदिरों को नहीं तोड़ा)। अंग्रेज़ आसपास के इलाके को सुरक्षित करना चाहते थे। ख़ासतौर से मसजिदों को या तो नष्ट कर दिया गया या उन्हें अन्य कामों के लिए इस्तेमाल किया जाने लगा। मिसाल के तौर पर, ज़ीनत-अल-मसजिद को एक बेकरी में तब्दील कर दिया गया। जामा मसजिद में पाँच साल तक किसी को नमाज़ की इजाज़त नहीं मिली। शहर का एक-तिहाई हिस्सा ढहा दिया गया। नहरों को पाटकर समतल कर दिया गया।

चित्र 7 – जामा मसजिद से देखने पर। फेलिस बिएतो द्वारा लिया गया फोटो, 1858-59.

मसजिद के चारों तरफ़ बनी इमारतों को देखें। 1857 की बग़ावत के बाद उन्हें साफ़ कर दिया गया था।

रेलवे की स्थापना करने और शहर को चारदीवारी के बाहर फैलाने के लिए 1870 के दशक में शाहजहाँनाबाद की पश्चिमी दीवारों को तोड़ दिया गया। अब अंग्रेज़ उत्तर की तरफ विकसित हुए विशाल सिविल लाइंस इलाके में रहने लगे। अब वे पुराने शहर में भारतीयों के साथ नहीं रहते थे। दिल्ली कॉलेज को एक स्कूल बना दिया गया और 1877 में उसे बंद कर दिया गया।

चित्र 8 *– आस पास की इमारतों को गिरा देने के बाद जामा मसजिद का दृश्य।*

गतिविधि

चित्र 7 और 8 की तुलना करें। इन चित्रों में जो फ़र्क दिखाई देता है उससे यहाँ रहने वाले लोगों पर क्या असर पड़े होंगे?

© NCERT not to be republished

एक नयी राजधानी की योजना

अंग्रेज़ों को दिल्ली के सांकेतिक महत्व का अच्छी तरह पता था। लिहाज़ा, 1857 की बग़ावत के बाद उन्होंने यहाँ बहुत सारे शानदार आयोजन किए। 1877 में वायसरॉय लिटन ने रानी विक्टोरिया को भारत की मलिका घोषित करने के लिए एक दरबार का आयोजन किया। वैसे तो ब्रिटिश भारत की राजधानी अभी भी कलकत्ता ही थी लेकिन इस विशाल दरबार का आयोजन दिल्ली में किया गया। इसकी क्या वजह रही होगी? विद्रोह के दौरान अंग्रेज़ों ने यह समझ लिया था कि लोगों की नज़र में मुग़ल बादशाह का महत्व अभी भी बना हुआ है और वे उसे ही अपना मुखिया मानते हैं। लिहाज़ा, ब्रिटिश सत्ता का मुग़ल बादशाहों और 1857 के बाग़ियों के मुख्य केंद्र में पूरी तड़क-भड़क के साथ प्रदर्शन किया गया।

***चित्र 9** - जॉर्ज पंचम का राज्याभिषेक (कॉरोनेशन) दरबार, 12 दिसंबर 1911.*
इस दरबार में 1,00,000 से ज़्यादा भारतीय राजा-महाराजा, अंग्रेज़ अफ़सर और सिपाही जमा हुए थे।

1911 में जब जॉर्ज पंचम को इंग्लैंड का राजा बनाया गया तो इस मौके पर दिल्ली में एक और दरबार का आयोजन हुआ। कलकत्ता की बजाय दिल्ली को भारत की राजधानी बनाने के फैसले का भी इसी दरबार में ऐलान किया गया।

तत्कालीन शहर के दक्षिण में रायसीना पहाड़ी पर दस वर्ग मील के इलाके में नयी दिल्ली का निर्माण किया गया। एडवर्ड लटयंस और हर्बर्ट बेकर नाम के दो वास्तुकारों को नयी दिल्ली और उसकी इमारतों का डिज़ाइन तैयार करने का जिम्मा सौंपा गया। नयी दिल्ली स्थित सरकारी

***चित्र 10** - रायसीना पहाड़ी के ऊपर स्थित वायसरीगल पैलेस (राष्ट्रपति भवन)।*

© NCERT not to be republished

परिसर में दो मील का चौड़ा रास्ता, वायसरॉय के महल (वर्तमान राष्ट्रपति भवन) तक जाने वाला किंग्सवे (वर्तमान राजपथ), और उसके दोनों तरफ सचिवालय की इमारतें बनाई गईं। इन सरकारी इमारतों की बनावट में भारत के शाही इतिहास के अलग-अलग दौर की झलक दिखायी देती थी। फिर भी इसका रूप मोटे तौर पर क्लासिकी यूनान (पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व) का दिखाई देता था। उदाहरण के लिए, वायसरॉय पैलेस का केंद्रीय गुंबद साँची में बने बौद्ध स्तूप की बनावट पर आधारित था। लाल भुरभुरे पत्थर और नक्क़ाशीदार जालियों की प्रेरणा मुग़ल वास्तुशिल्प से ली गई थी। लेकिन नयी इमारतों में ब्रिटिश प्रभुत्व की झलक भी ज़रूरी थी। इसीलिए वास्तुकारों ने इस बात का खयाल रखा कि वायसरॉय का महल शाहजहाँ की जामा मसजिद से भी ऊँचा हो!

यह काम कैसे किया जा सकता था?

नयी दिल्ली के निर्माण में लगभग 20 साल लगे। इरादा एक ऐसा शहर बनाने का था जो शाहजहाँनाबाद के मुक़ाबले बिलकुल अलग हो। उसमें भीड़ भरे मोहल्लों और संकरी गलियों के लिए कोई जगह नहीं थी। नयी दिल्ली में चौड़ी, सीधी सड़कों और विशाल परिसरों के बीच बड़ी-बड़ी इमारतों की कल्पना की गई थी। पुरानी दिल्ली में अफ़रा-तफ़री दिखाई देती थी। नया शहर स्वच्छ और स्वस्थ दिखाई पड़ता था। अंग्रेज़ों को भीड़ भरे इलाके गंदे और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक बीमारियों का स्रोत दिखाई देते थे। इसीलिए नयी दिल्ली में बेहतर जलापूर्ति, गंदगी के निकास और नालियों की पूरी व्यवस्था तैयार की गई। उसे ज़्यादा हरा-भरा बनाया गया। वहाँ पेड़ और बड़े-बड़े पार्क बनाए गए ताकि लगातार ताज़ी हवा और ऑक्सीजन मिलती रहे।

गतिविधि

कल्पना कीजिए कि आप राष्ट्रपति भवन की ओर देखते हुए रायसीना हिल की ओर बढ़ रहे हैं। क्या बेकर की तरह आपको भी ऐसा लगता है कि इस इमारत की ओर देखने से भव्यता और ब्रिटिश सत्ता की ताकत का बोध होता है।

स्रोत 3

नयी दिल्ली की कल्पना

दिल्ली को राजधानी के रूप में चुनने के पीछे वायसरॉय हार्डिंग ने यह वजह बताई थी :

> यह बदलाव भारत के लोगों की कल्पना के अनुरूप होगा.... और सभी लोग भारत में ब्रिटिश शासन को बनाए रखने के अदम्य संकल्प के रूप में इसकी सराहना करेंगे।

वास्तुकार हर्बर्ट बेकर की राय में :

> नयी राजधानी अच्छे शासन और एकजुटता का पाषाण प्रतीक होनी चाहिए जो ब्रिटिश शासन के तहत भारत के इतिहास में एक नयी बात है। भारत में ब्रिटिश शासन केवल शासन और संस्कृति की एक परत भर नहीं है। यह एक पनपती हुई नयी सभ्यता है, इसमें पूर्व और पश्चिम के श्रेष्ठ तत्वों का मिश्रण है...। दिल्ली के वास्तुशिल्प में इस महान तथ्य की झलक मिलनी चाहिए। (2 अक्टूबर 1912)

गतिविधि

क्या आप इस अध्याय में ऐसे दो उदाहरण ढूँढ़ सकते हैं जिनसे पता चलता है कि राजधानी की छवि के बारे में कोई भिन्न तरह की सोच भी मौजूद थी।

© NCERT not to be republished

विभाजन के समय जीवन

1947 में भारत के विभाजन से नयी सीमा के दोनों तरफ आबादी बड़ी तादाद में विस्थापित हुई। इसका नतीजा यह हुआ कि दिल्ली की आबादी बढ़ गई। रोज़गार बदल गए और शहर की संस्कृति बिलकुल भिन्न हो गई।

स्वतंत्रता और विभाजन के कुछ ही दिनों बाद भीषण दंगे शुरू हो गए। दिल्ली में हज़ारों लोग मारे गए और उनके घर-बार लूटकर जला दिए गए। दिल्ली से पाकिस्तान जाने वाले मुसलमानों की जगह पाकिस्तान से आए सिख और हिंदू शरणार्थियों ने ले ली। शाहजहाँनाबाद में लावारिस मकानों पर कब्ज़े के लिए शरणार्थियों के झुंड घूमने लगे। कई बार उन्होंने मुसलमानों को भाग जाने और अपनी संपत्ति बेचने के लिए मज़बूर भी किया। दिल्ली के दो-तिहाई मुसलमान पलायन कर गए थे जिससे लगभग 44,000 मकान खाली हो गए। बहुत सारे मुसलमान पाकिस्तान जाने के इंतज़ार में कामचलाऊ शिविरों में रहने लगे।

उस समय दिल्ली शरणार्थियों का शहर बन गई थी। दिल्ली की आबादी में लगभग पाँच लाख की वृद्धि हो गई (जबकि 1951 में यहाँ की आबादी 8 लाख से कुछ ही ज़्यादा थी)। ज़्यादातर लोग पंजाब से आए थे। वे शिविरों, स्कूलों, फ़ौजी बैरकों और बाग-बगीचों में आकर रहने लगे। उनमें से कुछ को खाली पड़े मकानों पर कब्ज़े का मौका मिल गया। बहुत सारे लोग शरणार्थी बस्तियों में रहने लगे। लाजपत नगर और तिलक नगर जैसी बस्तियाँ इसी समय बसी थीं। दिल्ली में आने वालों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए दुकान और स्टॉल खुल गए। कई नए स्कूल और कॉलेज भी खोल दिए गए।

जो लोग यहाँ से गए थे उनकी जगह आए शरणार्थियों की निपुणता और काम-धंधे बिलकुल अलग थे। पाकिस्तान जाने वाले बहुत सारे मुसलमान कारीगर, छोटे-मोटे व्यापारी और मज़दूर थे। दिल्ली आए नए लोग ग्रामीण भूस्वामी, वकील, शिक्षक, व्यापारी और छोटे दुकानदार थे। विभाजन ने उनकी ज़िंदगी और उनके व्यवसाय बदल दिए थे। फेरीवालों, पटरीवालों, बढ़ई और लुहारों के तौर पर उन्होंने नए रोज़गार अपनाए। इनमें से बहुत सारे नए व्यवसायों में काफ़ी सफल भी रहे।

चित्र 11 – विभाजन के बाद हज़ारों लोग दिल्ली में बने शरणार्थी शिविरों में रहने लगे थे।

पंजाब से आई विशाल टोलियों ने दिल्ली का सामाजिक परिवेश पूरी तरह बदल दिया। भोजन, पहनावे और कला के हर क्षेत्र में मुख्य रूप से उर्दू पर आधारित शहरी संस्कृति नयी रुचियों और संवेदनशीलता के नीचे दब गई।

पुराने शहर के भीतर

इस बीच पुराने शहर यानी शाहजहाँनाबाद का क्या हुआ? अतीत में मुग़लों के जमाने की प्रसिद्ध नहरों से घरों में न केवल पीने का ताज़ा पानी आता था बल्कि

© NCERT not to be republished

दूसरी घरेलू ज़रूरतों के लिए भी पानी मिल जाता था। उन्नीसवीं सदी में जलापूर्ति और निकासी की इस बेहतरीन व्यवस्था को नज़रअंदाज़ किया जाने लगा। कुओं (बावड़ी) की व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई। घरेलू कचरे की निकासी करने वाली धाराएँ भी क्षतिग्रस्त थीं। यह एक ऐसे समय की बात है जब शहर की आबादी लगातार बढ़ रही थी।

टूटी-फूटी नहरें इस तेज़ी से बढ़ती आबादी की ज़रूरत को पूरा नहीं कर सकती थीं। उन्नीसवीं सदी के आखिर में शाहजहाँनी नालियों को बंद कर दिया गया और खुली नालियों की नयी व्यवस्था विकसित की गई। जल्दी ही यह प्रणाली भी बोझ से चरमराने लगी। बहुत सारे अमीर लोगों को सड़क किनारे बहती नालियों और उफनते खुले नालों की बदबू परेशान करती थी। दिल्ली म्युनिसिपल कमेटी एक अच्छी निकासी व्यवस्था पर पैसा खर्च करने को तैयार नहीं थी।

तथापि, उसी समय नयी दिल्ली के इलाके में निकासी व्यवस्था पर लाखों रुपये खर्च किए गए।

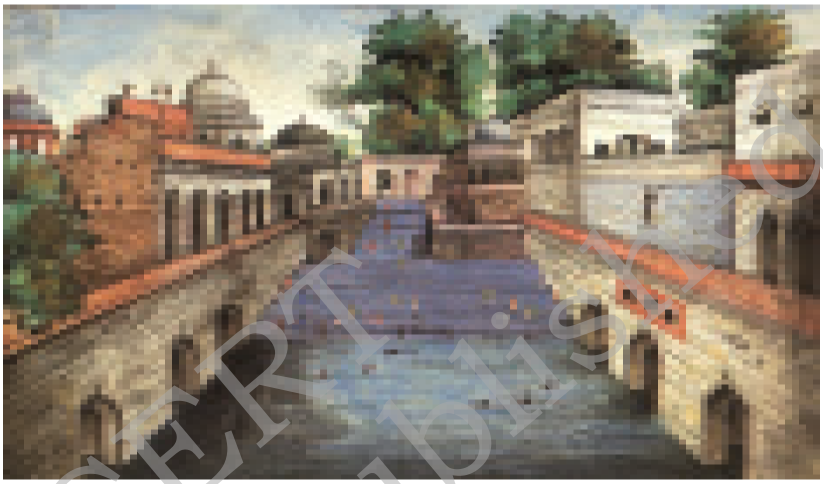

चित्र 12 *– दिल्ली में निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह के पास बनी एक प्रसिद्ध बावड़ी।*

हवेलियों का पतन

सत्रहवीं और अठाहरवीं शताब्दियों में मुग़ल कुलीन वर्ग भव्य हवेलियों में रहता था। उन्नीसवीं सदी के मध्य का नक्शा देखने पर ऐसी कम से कम सौ हवेलियाँ दिखाई देती हैं। ये चारदीवारी से घिरे दालान और झरनों वाली भव्य इमारतें थीं।

चित्र 13 *– उन्नीसवीं सदी के आखिर में दिल्ली का चाँदनी चौक।*

© NCERT not to be republished

> **गतिविधि**
>
> दो बच्चों की कल्पना कीजिए। उनमें से एक हवेली में रहता है और दूसरा औपनिवेशिक बंगले में। अपने परिवार के साथ उनके संबंधों में क्या फ़र्क होगा? आप कौन से बच्चे की तरह जीना पसंद करेंगे? अपने सहपाठियों के साथ अपनी राय पर चर्चा करें और बताएँ कि आपने यह चुनाव क्यों किया?

एक हवेली में बहुत सारे परिवार रहते थे। खूबसूरत फाटक से भीतर जाने पर हवेली के अंदर आप एक खुले अहाते में पहुँच जाते थे। इसके चारों तरफ मेहमानों और कारोबारियों के लिए सार्वजनिक कमरे बने होते थे जिनका सिर्फ़ पुरुष ही इस्तेमाल करते थे। भीतरी दालान और कमरे परिवार की औरतों के लिए होते थे। हवेली के कमरों का कई कामों के लिए इस्तेमाल होता था। उनमें फ़र्नीचर बहुत कम होता था।

यहाँ तक कि उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक भी क़मर-अल-दीन ख़ान की हवेली में कई इमारतें थीं। उनमें गाड़ीवानों, तम्बू लगाने वालों (डेरवाल), मशालची, खातेदारों, क्लर्कों, घरेलू नौकरों के रहने का इंतज़ाम था।

बहुत सारे मुग़ल अमीर ब्रिटिश शासन के समय इन विशालकाय इमारतों को सँभालने की हालत में नहीं थे। फलस्वरूप, हवेलियाँ बँटने लगीं। उनके हिस्सों को बेचा जाने लगा। हवेलियों के जो हिस्से सड़क पर खुलते थे वहाँ दुकानें या गोदाम बन गए। कुछ हवेलियाँ नए उभरते व्यवसायी वर्ग के नियंत्रण में चली गईं। बहुत सारी उपयोग में न होने के कारण बेकार हो गईं।

औपनिवेशिक बंगले इन हवेलियों से बिलकुल अलग थे। ये बंगले एकल परिवारों के लिए बनाए गए थे। इसलिए उनमें एक मंज़िल की ढलवाँ छत वाली इमारत होती थी। ये बंगले आमतौर पर एक या दो एकड़ के खुले स्थान पर बने होते थे। इनमें रहने, खाने और सोने के कमरे अलग थे। अगले हिस्से में एक लंबा बरामदा होता था। कई बंगलों में तीन तरफ़ बरामदा बनाया जाता था। रसोई घर, अस्तबल और नौकरों के क्वार्टर मुख्य मकान से अलग बनाए जाते थे। घर की देखभाल के लिए दर्जनों नौकर होते थे। परिवार की औरतें अक्सर दर्ज़ियों या अन्य कारीगरों पर नज़र रखने के लिए बरामदे में बैठती थीं।

अमीर – कुलीन वर्ग का व्यक्ति

नगरपालिका योजना बनाती है

1931 की जनगणना से पता चला कि पुराने शहर के इलाके में भयानक भीड़ हैं। यहाँ प्रति एकड़ 90 लोग रहते थे जबकि नयी दिल्ली में प्रति एकड़ केवल 3 लोगों का औसत था।

चित्र 14 – नयी दिल्ली का एक औपनिवेशिक बंगला।

© NCERT not to be republished

पुराने शहर के बिगड़ते हालात के बावजूद उसका फैलना जारी रहा। पुराने शहर के निवासियों के लिए रॉबर्ट क्लार्क ने 1888 में लाहौर गेट सुधार योजना के नाम से एक विस्तार योजना तैयार की। इसके पीछे सोच यह थी कि यहाँ के निवासियों को पुराने शहर से अलग एक नए तरह के चौराहा बाज़ार की तरफ ढकेला जाए। इस चौराहे पर चारों तरफ दुकानों की कल्पना की गई थी। इस पुनर्विकास में सड़कों के लिए जाल वाली संरचना तय की गई। सभी सड़कों की चौड़ाई, आकार और स्वरूप एक जैसा होना था। मोहल्लों के निर्माण के लिए ज़मीन को एक जैसे टुकड़ों में बाँट दिया गया था। इस नए स्थान को क्लार्कगंज का नाम दिया गया। यह कभी पूरा नहीं हो पाया और उसने पुराने शहर को भीड़ से आज़ाद कराने में कोई मदद नहीं की। यहाँ तक कि 1912 में भी इन नए स्थानों पर जलापूर्ति और निकासी की व्यवस्था बहुत खराब थी।

दिल्ली सुधार ट्रस्ट का गठन 1936 में किया गया। इस योजना के तहत संपन्न लोगों के लिए दरियागंज दक्षिण जैसे इलाके बनाए गए। यहाँ पार्कों के इर्द-गिर्द रिहायशी मकान बने। मकानों के भीतर निजता की नयी सोच के हिसाब से जगह बँटी हुई थी। अब बहुत सारे परिवार या समूह साझा जगह पर नहीं रहते थे बल्कि मकान के भीतर एक ही परिवार के विभिन्न सदस्यों के लिए अलग-अलग जगह होने लगी।

चित्र 15 *– पुरानी दिल्ली की एक सड़क।*

© NCERT not to be republished

अन्यत्र

दक्षिण अफ़्रीका में हर्बर्ट बेकर

अगर आप चित्र 16 और 17 को देखें तो पाएँगे कि इन दोनों इमारतों में भारी समानता है। लेकिन ये दोनों इमारतें बिलकुल अलग-अलग महाद्वीपों की हैं। इस बात से क्या पता चलता है?

चित्र 16

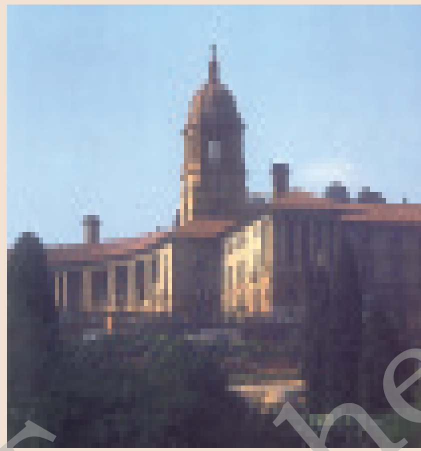

चित्र 17

1890 के दशक की शुरुआत में हर्बर्ट बेकर नाम का एक युवा अंग्रेज़ वास्तुकार काम की तलाश में दक्षिण अफ़्रीका पहुँचा। यहीं बेकर की मुलाक़ात केपटाउन के गवर्नर सेसिल रोड्स से हुई जिसने बेकर के भीतर ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति प्यार और प्राचीन रोमन व यूनानी वास्तुशिल्प के प्रति प्रशंसा का भाव पैदा कर दिया।

चित्र 17 में दक्षिण अफ़्रीका स्थित प्रिटोरिया शहर की यूनियन बिल्डिंग दिखाई दे रही है जिसकी रूपरेखा बेकर ने तैयार की थी। इसमें प्राचीन प्रतिष्ठित वास्तुशिल्प के तत्वों का इस्तेमाल किया गया था जिनका बेकर ने नयी दिल्ली स्थित सचिवालय भवन की योजना में भी इस्तेमाल किया। यूनियन बिल्डिंग भी नयी दिल्ली स्थित सचिवालय भवन (चित्र 16) की तरह एक पहाड़ी पर स्थित थी। क्या आपने ध्यान दिया कि सत्ता में बैठे लोग नीचे से ऊपर की ओर देखने की बजाय ऊपर से नीचे की तरफ़ देखना पसंद करते हैं? यूनियन बिल्डिंग और सचिवालय भवन, दोनों को शाही दफ़्तरों के लिए बनाया गया था।

आइए कल्पना करें

मान लीजिए कि आप सन् 1700 के आसपास शाहजहाँनाबाद में रहते हैं। इस अध्याय में दिए गए ब्योरों के आधार पर उस जीवन के किसी एक दिन के अपने अनुभव लिखें।

फिर से याद करें

1. सही या गलत बताएँ :

(क) पश्चिमी विश्व में आधुनिक शहर औद्योगीकरण के साथ विकसित हुए।

(ख) सूरत और मछलीपट्नम का उन्नीसवीं शताब्दी में विकास हुआ।

(ग) बीसवीं शताब्दी में भारत की ज़्यादातर आबादी शहरों में रहती थी।

(घ) 1857 के बाद जामा मसजिद में पाँच साल तक नमाज़ नहीं हुई।

(ङ) नयी दिल्ली के मुक़ाबले पुरानी दिल्ली की साफ़-सफ़ाई पर ज़्यादा पैसा खर्च किया गया।

© NCERT not to be republished

2. रिक्त स्थान भरें :

(क) सफलतापूर्वक गुंबद का इस्तेमाल करने वाली पहली इमारत .... थी।

(ख) नयी दिल्ली और शाहजहाँनाबाद की रूपरेखा तय करने वाले दो वास्तुकार .... और .... थे।

(ग) अंग्रेज़ भीड़ भरे स्थानों को .... मानते थे।

(घ) .... के नाम से 1888 में एक विस्तार योजना तैयार की गई।

3. नयी दिल्ली और शाहजहाँनाबाद की नगर योजना में तीन फर्क ढूँढ़ें।

4. मद्रास जैसे शहरों के "गोरे" इलाकों में कौन लोग रहते थे?

आइए विचार करें

5. विशहरीकरण का क्या मतलब है?

6. अंग्रेज़ों ने दिल्ली में ही विशाल दरबार क्यों लगाया जबकि दिल्ली राजधानी नहीं थी।

7. पुराना दिल्ली शहर ब्रिटिश शासन के तहत किस तरह बदलता गया?

8. विभाजन से दिल्ली के जीवन पर क्या असर पड़ा?

आइए करके देखें

9. अपने शहर या आसपास के किसी शहर के इतिहास का पता लगाएँ। देखें कि वह कब और कैसे फैला तथा समय के साथ उसमें क्या बदलाव आए हैं। आप बाज़ारों, इमारतों, सांस्कृतिक संस्थानों और बस्तियों का इतिहास दे सकते हैं।

10. अपने शहर, क़स्बे या गाँव के कम से कम दस व्यवसायों की सूची बनाएँ। पता लगाएँ कि ये व्यवसाय कब से चले आ रहे हैं। इस सूची से इस इलाके में आए बदलावों के बारे में क्या पता चलता है?

© NCERT not to be republished

टिप्पणी

© NCERT
not to be republished